समूह सामंजस्यता (Group Cohesiveness)

समूह सामंजस्यता से तात्पर्य यह है कि समूह के सभी सदस्य किस सीमा तक समूह में बने रहने के लिए प्रेरित रहते हैं। किस सीमा तक समूह के सदस्य समूह में बने रहने के लिए प्रेरित रहते हैं, समूह सामंजस्यता उतनी ही अच्छी मानी जाती है।

Festinger (1950) के अनुसार "समूह सामंजस्यता उन सभी बलों के परिणामी होता है, जो सदस्यों को समूह में रहने के लिए बाध्य करता है।"

इसे समूह सामंजस्यता के बारे में निम्नांकित तथ्य स्पष्ट होते हैं—

(i) समूह, सदस्यों के लिए जितनी अधिक आकर्षक होगा, समूह सामंजस्यता उतनी ही अधिक होगी।

(ii) समूह सामंजस्यता अधिक होने पर सदस्यों में संतुष्टि भी अधिक होती है।

(iii) समूह में सामंजस्य अधिक होने पर सदस्यों को समूह लक्ष्य की ओर प्रेरित करना आसान होता है।

(iv) अधिक सामंजस्यता वाले समूह अधिक स्थिर होते हैं, क्योंकि इनमें सदस्यों का मनोबल भी ऊँचा होता है।

समूह सामंजस्यता को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Influencing of Groups Cohesiveness) —

समाज मनोवैज्ञानिकों ने बहुत से ऐसे कारकों की पहचान की है, जिनसे समूह सामंजस्यता प्रभावित होती है। कुछ प्रमुख कारक निम्नांकित हैं—

आवश्यकताओं की संतुष्टि (Satisfaction of needs) —

किसी भी समूह में कुछ प्राथमिक या प्रभावी एवं कुछ गौण या अप्रभावी सदस्य होते हैं। समूह प्रभावी सदस्यों की अधिकांश आवश्यकताओं एवं गौण सदस्यों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समाज मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जिस समूह में दोनों तरह के अधिकतर सदस्यों की अधिकांशतः आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, उस समूह का आकर्षण

NOTES

Scanned with CamScanner

अधिक होता है तथा उसमें समूह सामंजस्यता भी अधिक होती है। यदि समूह अपने सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं कर पाता है तो ऐसी परिस्थिति में सदस्यों का आकर्षण समूह के प्रति नहीं रह जाता है और समूह सामंजस्यता कम हो जाती है।

समूह लक्ष्य (Group Goals) — प्रत्येक समूह का एक लक्ष्य होता है जिसे समूह लक्ष्य कहा जाता है। प्रत्येक सदस्य का समूह लक्ष्य में एक सामान्य विश्वास होता है। साथ ही सदस्यों का अपना-अपना वैयक्तिगत लक्ष्य भी होता है। समाज मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जब समूह लक्ष्य एवं सदस्यों के व्यक्तिगत लक्ष्य में संगति होती है तो समूह सामंजस्यता अधिक होती है। यदि इन दोनों तरह के लक्ष्यों में किसी तरह की असंगति उत्पन्न हो जाती है तो सदस्य अपने व्यक्तिगत लक्ष्य को प्राथमिकता देने लगते हैं और समूह सामंजस्यता कम हो जाती है।

सदस्यों में आकर्षकता (Member Attractiveness) — कोई समूह यदि अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर पाता है परंतु उसकी सदस्यता किसी कारणवश सदस्यों के लिए आकर्षक होती है तो भी समूह सामंजस्यता बनी रहती है। कभी-कभी यदि समूह में सदस्यों का एक-दूसरे के प्रति प्रेम, स्नेह या आकर्षण नहीं है तो वैसे परिस्थिति में समूह की लक्ष्य प्राप्ति भी सदस्यों के लिए सुखकारी एवं लाभदायक होते हुए भी समूह सामंजस्यता तथा सहभागिता में कमी हो जाती है।

समूह की क्रियाएँ एवं नेतृत्व (Group Activities & Leadership) — समूह सामंजस्यता समूह के नेतृत्व एवं सदस्यों की क्रियाओं पर भी निर्भर करता है। यदि समूह द्वारा की जाने वाली क्रियाएँ ऐसी हैं, जिनके प्रति सदस्यों में आकर्षकता है तथा जिसे सदस्यों द्वारा सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया जा रहा है तो ऐसी परिस्थिति में समूह सामंजस्यता अधिक होती है। हैकमैन एवं ओल्डहम (1976) ने अपने अध्ययन

में पाया कि जब कर्मचारियों के क्रियाकलापों एवं उत्तरदायित्व को अधिक विस्तृत कर दिया जाता है तो इससे कर्मचारी अपने काम को अधिक आकर्षक समझने लगते हैं। जिससे समूह सामंजस्यता अधिक बढ़ जाती है।

समूह सामंजस्यता समूह के नेतृत्व द्वारा भी प्रभावित होती है। Cartwright (1968) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि जिस समूह का नेता प्रजातांत्रिक तरीके से व्यवहार करता है तथा महत्वपूर्ण निर्णय एवं कार्यों में समूह के अन्य सदस्यों की सहभागिता को प्रोत्साहित करता है। वैसे समूह में सामंजस्यता अधिक पायी जाती है। वहीं दूसरी तरफ जिस समूह का नेता सत्तावादी ढंग से व्यवहार करता है तथा सभी निर्णय स्वयं ही लेकर अन्य सदस्यों पर थोप देता है, वैसे समूह में सामंजस्य की काफी कमी पायी जाती है।

इसप्रकार यह देखा जा सकता है कि समूह सामंजस्यता अनेक कारकों द्वारा प्रभावित होते हैं, जिनमें कुछ की पहचान समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा की गई है। यदि समूह सामंजस्यता अधिक होती है, तो समूह का स्वस्थ रूप से विकास एवं विस्तार हो जाता है, परंतु समूह सामंजस्यता की कमी के कारण समूह का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। अतः किसी भी समूह के लिए समूह सामंजस्यता का उच्च होना अति-आवश्यक है।